अलवज़ीफ़तुल करीमा (आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा)

(1) *सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही वला कुव्व त इल्ला बिल्लाहि मा शाअल्लाहु का न वमा लम यशा लम यकुन अअ़लमु अन्नल्ला ह अ़ला कुल्लि शैइन क़दीरुंव अन्नल्ला ह क़द अहा त बिकुल्लि शैइन इल्मा* –1बार

फज़ाइलः तमाम आफतों से हिफाज़त के लिए ।

(2) *आयतल कुर्सीः* अऊज़ुबिल्लाहिमिनश्शैतॉनिर्रजीम बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० *अल्लाहु ला इला ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूम,ला त खुज़ुहू सि न तुंव वला नौम लहू मा फिस्समावाति वमा फिलअर्दि,मन ज़ल्लज़ी यशफउ इन्दहू इल्ला बिइज़्निही यअ़लमु मा बै न ऐदीहिम वमा ख़ल्फहुम वला युहीतू न बिशैइम्मिन इल्मिही इल्ला बिमा शा अ वसि अ़ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल अर्दि वला यऊदुहू हिफ्ज़ुहुमा वहुवल अ़लिय्युल अ़ज़ीम 0*

हामीम,तन्ज़ीलुल किताबि मिनल्लाहिल अ़ज़ीज़िल हकीम0ग़ाफिरिज़्ज़म्बि व क़ाबिलित्तौबि शदीदिल अ़िक़ाबि ज़ित्तौलि,ला इला ह इल्ला हु व इलैहिल मसीर –1 बार

फज़ाइलःजिन भूत वग़ैरह से हिफाज़त (तिर्मिज़ी)

(3)सूरह इख़्लास– अऊज़ुबिल्लाहिमिनश्शैतॉनिर्रजीम बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०कुल हुवल्लाहु अहद०अल्लाहुस्समद०लम यलिद वलम यूलद०वलम यकुल्लहू कुफुवन अहद०सूरहफलक़–बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०कुल अऊज़ु बिरब्बिल फलक़०मिन शर्रि मा ख़ लक़०वमिन शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब०वमिन शर्रिन्नफ्फ़ासाति फिल उक़द०वमिन शर्रि हासिदिन इज़ा हसद०सूरह नास–बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०कुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास०मलिकिन्नास०इलाहिन्नास०मिन शर्रिल वस्वासिल ख़न्नास०अल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नास०मिनल जिन्नति वन्नास०– तीनों कुल तीन तीन बार

फज़ाइलःइन तीनों नम्बरों का फायदा हर बला से महफूज़ी है सुबह पढ़े तो शाम तक और शाम पढ़े तो सुबह तक–

(4)बिस्मिल्लाहि मा शाअल्लाहु ला यसूक़ुल ख़ै र इल्लल्लाहु मा शाअल्लाहु ला यस्रिफुस्सू अ इल्लल्लाहु मा शाअल्लाहु मा का न मिन्निअ़मतिन फमिनल्लाहि मा शाअल्लाहु ला हौ ल वला कुव्व त इल्ला बिल्लाहि– तीन तीन बार

फज़ाइलःइस का फायदा सात चीज़ों से पनाह है। जलना.डूबना.चूरी.सांप.बिच्छू.शैतान.सुल्तान.सुबह पढ़े तो शाम तक और शाम पढ़े तो सुबह तक–

(5) अऊज़ु बि क लिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन शर्रि मा ख़लक़ 0– 3–3बार बार

फज़ाइलःसांप बिच्छू वग़ैरा मूज़ियात जानवर से पनाह हो।

(6)*बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यदुर्रु म अ़ इस्मिही शैउन फिलअर्दि वला फिस्समा इ वहु अस्समीउल अ़लीम* –3–3बार

फज़ाइलःज़हर व हिर्ज़ से अमान हो ।

(7) रदीतु बिल्लाहि रब्बंव बिल इस्लामि दीनंव बिसय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लमा नबिय्यंव रसूला0 3–3 बार।

फज़ाइलःअल्लाह अ़ज़्ज़ा वजल्ल के करम पर हक़ है कि रोज़े क़्यामत उसे राज़ी करे।

(8) हस्बियल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व अ़लैहि तवक्कल्तु वहु व रब्बुल अ़र्शिल अ़ज़ीम 0 दस–दस बार

फज़ाइलःहर बला व मकर से महफूज़ी और तमाम मक़ासिद में कामयाबी।

(9) फसुबहानल्लाहि ही न तुम्सू न व ही न तुस्बिहू न 0 व ल हुल हम्दु फिस्समावाति वलअर्दि व अ़शिय्यंव व ही न तुज़्हिरुन युख़रिजुल हय्य मिनल मय्यिति व युखरिजुल मय्यि त मिनल हय्यि व युहयिल अर्दा बअ़ द मौतिहा व कज़ालि क तुख़रजून 0 1–1 बार।

फज़ाइलःजिस किसी दिन सब वज़ाइफ रह जायें तो यह तन्हा उन सब की जगह काफी है। नीज़ रात दिन के हर नुक़सान की तलाफी है।

(10) अ फ हसिब्तुम अन्नमा ख़लक़नाकुम अ़ ब षंव अन्नकुम इलैना ला तुर जऊन 0 फ त आलल्लाहुल मलिकुल हक़्कुल मुबीन0ला इला ह इल्ला हु व अ़लैहि रब्बुल अ़र्शिल करीम व मंय्यदउ मअ़ल्लाहि इलाहन आ ख र ला बुरहा न लहु बिही फइन्नमा हिसाबुहू इन्द द रब्बिही इन्नहू ला युफ्लिहुल काफिरुन व क़ुर्रब्बिग़फिर वरहम व अन त ख़ैरुर्राहिमीन0 1–1 बार

फज़ाइलःशैतान व जिन्न व आफात से हिफाज़त ।

(11)अऊज़ुबिल्लाहिस्समीइलअ़लीमि मिनश्शैतानिर्रजीम0 3 बार फिर–हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला ह इल्ला हु अ आ़लिमुल ग़ैबि वश्शहादति हुवर्रहमानुर्रहीम0हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला ह इल्ला हुअल मलिकुल कुद्दूसुस्सलामुलमूमिनुलमुहैमिनुलअ़ज़ीज़ुल जब्बारुल मु त कब्बिर सुब्हानल्लाहि अ़म्मा युश्रिकून0हुवल्लाहुल ख़ालिक़ुल बारिउल मुसव्विरु लहुल अस्माउल हुस्ना युसब्बिहु लहू मा फिस्समावाति वलअर्दि0वहुल अ़ज़ीज़ुल हकीम0 1–1 बार

फज़ाइलःयह सूरह हश्र की अख़ीर की तीन आयतें एक बार सुबह पढ़े तो शाम तक सत्तर हज़ार फरिश्ते उस के लिए इस्तेग़फार करें और उस दिन मरे तो शहीद और शाम को पढ़े तो सुबह तक यही हुक्म है।

(12) अल्लाहुम्मा इन्ना नऊज़ुबि क मिन अन्नुशरि क बि क शैअन्नअ़ लमुहू व नस्तग़्फिरु क लिमा ला नअ़लमुहू 0 3—3 बार

फज़ाइलः ख़ात्मा ईमान पर हो।

(13) बिस्मिल्लाहि अ़ला दीनी बिस्मिल्लाहि अ़ला नफ्सी व वुल्दी व अहली वमाली 0 3—3 बार

फज़ाइलःदीन ईमान जान माल बच्चे सब महफूज़ रहें ।

(14) अल्लाहुम्‍ म मा अस् ब ह ली मिन्निअ़मतिन औ बि अ ह दिम्मिन ख़ल्क़ि क फमिन क वह द क ला शरी क ल क फ ल कल ह़म्दु व लकश्शुकरु ...ला इला ह इल्ला अन्‍ त सुब्हा न क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन0 एक एक बार

फज़ाइलःसुबह को कहे तो दिन भर सब निअ़मतों का शुकर अदा किया और शाम को.तो शब भर की। नोटःसुबह को अस् ब ह और शाम को अम्सा पढ़ेंगे।

(15)बिस्मिल्लाहि जलीलिश्शन.अ़ज़ीमिल बुरहानि शदीदिस्सुल्तानि मा शाअल्लाहु का न अऊज़ुबिल्लाहिमिनश्शैतॉनिर्रजीम 0 1—1 बार

फज़ाइलः शैतान और उस के लश्करों से महफ़ूज़ रहे।

(16) अल्लाहुम्‍ म इन्नी अस्बह़तु उशहिदु क व उशहिदु ह़म ल त अर्शि क व मलाइ क ति क व जमी अ़ ख़ल्क़ि क इन्‍ न क अन्तल्लाहु ला इला ह इल्ला अन्‍ त वह द क ला शरी क. ल क व अन्‍ न मुहम्मदन अ़ब्दु क व रसूलु क़ सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम 0 चार बार

फज़ाइलः हर बार चहारुम हिस्सा बदन दोज़ख़ से आज़ाद हो। नोटः शाम को अस्बह़तु की जगह अम्सैतु पढ़े।

(17) अल्लाहुम्‍ म लकल ह़म्दु ह़म्दन दाइमम्मा दवामि क व लकल ह़म्दु ह़म्दन ख़ालिदम्‍ म अ़ खुलूदि क व लकल ह़म्दु ह़म्दल्ला मु न्तहा लहू दू न मशिय्यति क व लकलहम्दु ह़म्दन अ़िन्‍ द कुल्लि तुर फ त अ़ैनिं व तनफ्फुसि कुल्लि नफ्स0

फज़ाइलः एक एक बार— गोया उस ने उस दिन रात पूरी इबादत का हक़ अदा किया

(18) अल्लाहु म्‍ म इन्नी अ़ऊज़ुबि क मिनल हम्मि वल्हुज़्नि व अ़ऊज़ुबि क मिनल इज्ज़ि वल क स लि व अ़ऊज़ुबि क मिनल जुब्नि वल बुख़्लि व अ़ऊज़ुबि क मिन ग़ ल बतिद्दीनि व क़हर्रिजाल 0

फज़ाइलः ग़म व अलम से बचे। अदाए क़र्ज़ के लिए ग्यारह ग्यारह बार पढ़े।

1 बार और अदाईगी ए क़र्ज़ के लिए रोज़ ग्यारह बार.वर्ना 1 बार अव्वल व आखिर ग्यारह बार दरुद शरीफ।

(19) या ह़य्यु या क़य्यूमु बिरह़मति क अस्तग़ीषु फला तकिलनी इला नफ्सी तुर फ त अ़ैनिं वस्लिह ली शानी कुल्लहू 0 एक एक बार —

फज़ाइलः सब काम बनें।

(20) अल्लाहुम्‍ म ख़िरली वख़्तरली वला तकिलनी इला इख़्तियारी 0 सात बार — दिन रात के हर काम के लिए इस्तेख़ारा है।

(21)एक एक बार या तीन बार । गुनाह मुआ़फ हों और उस दिन रात मरे तो शहीद वह यह है। सय्यदुल इस्तेग़फार अल्लाहुम्‍ म्‍ अन्‍ त रब्बी ला इला ह अन्‍ त अ़लै क तवक्कलतु व अन्‍ त रब्बुल अर्शिल करीम मा शाअल्लाहु का न वमा लम यशा लम यकुन वला ह़ौ ल वला क़ुव्‍ व त इल्ला बिल्लाहिल अ़लिय्यिल अ़ज़ीम 0अअ़लमु अन्नल्ला ह अ़ला कुल्लि शैइन क़दीरुंव अन्नल्ला ह क़द अह़ा त बिकुल्लि शैइन इल्मा 0 अल्लाहुम्‍ म इन्नी अऊ़ज़ुबि क मिन शर्रि नफ्सी वमिन शर्रि कुल्लि दाब्बतिन अन्‍ त आख़िज़ुम्बिनासि य तिहा इन्‍ न रब्बी अ़ला सिरातिम्मुस्तक़ीम 0

(22)ला इला ह इल्लल्लाहुल ह़क़्क़ुल मुबीन मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि सादिक़ुल वअ़दिल अमीन0

फज़ायलः दी व दुनिया में तरक़्क़ी हो हश्र में घबराहट न हो रोज़ी में इज़ाफा हो।

इस्लाह करना हमारा काम है अ़मल करना ना करना आप का काम है। इस पर्चे की हिफाज़त करें

रज़ा हिन्दी इस्लामिक लाइब्रेरी,जामा मस्जिद दमुआ
मौलाना कारी हकीम मुहम्मद अब्दुर्रहीम खान कादरी रज़वी , जमदा शाही, जिला बस्ती (यु.पी)पिन 272002मोबाईल
मोबाईल नम्बर 07415066579 - जामा मस्जिद दमुआ,जिला छिन्दवाड़ा (मध्यप्रदेश) 480555
E:mail-khanjamdashahi@gmail.com www.jamdashahi.blogspot.com
www.ISSUU.COM/abdurrahimkhan

सिर्फ सुबह

(1)बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम0वला हौ ल वला कुव्व त इल्ला बिल्लाहि अ़लिय्यिल अ़ज़ीम0जितनी बार मर्ज़ी हो पढ़े फायदाः हर काम बने.शैतान से महफूज़ रहे।(2)सूरह इख़्लास (कुल हुवल्लाहु अहद)ग्यारह बार फायदाः अगर शैतान मअ़ अपने *लशकर के कोशिश करे कि उस से गुनाह कराए न करा सके जब तक कि यह खुद न करे।*

(3) या हय्यु या क़य्यूमु ला इला ह इल्ला अन्‌ त सुब्हा न क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ॉलिमीन – 41 बार फायदाः उस का दिल ज़िन्दा रहेगा। और ख़ात्मा ईमान पर होगा। *(4) सुब्हानल्लाहिल अ़ज़ीमि व बिहम्दिही 0 तीन तीन बार–* फायदाः जुनून (पागल पन)जुज़ाम (कोढ़ पन) व बर्स (सफेद दाग़) व नाबीनाई (अन्धा पन)से बचे। *(5)तिलावत कुरआन कम अज़ कम एक पारह हत्तल इम्कान सूरज निकलने से पहले हो और अगर सूरज निकल आए तो ठहर जाए और ज़िकर अ़ज़्कार करे और सूरज निकले हुए 15 से 20 मिनट हो जाए तो चाहे तिलावत करे 1 पारह पूरा करे या दो रकअ़त नमाज़ इशराक़ पढ़े। जिन तीन वक़्तों में नमाज़ नाजाइज़ है तिलावत भी मकरुह है।*

(6)दलाइलुल खैरात शरीफ–एक हिज़्ब पढ़े। नोटः दलाइलुल खैरात शरीफ एक मशहूर किताब है जो दरुद की है जो दुनिया में कुरआन शरीफ के बाद सब से ज़्यादा पढ़ी जाने वाली किताब है जिस के पढ़ने की बड़ी फज़ीलत है।

(7)शिजरा शरीफ पढ़े । शजरा शरीफ. दलाइलुल खैरात शरीफ. चाहे सूरज निकलने से पहले पढ़े या बअ़द में अपनी मर्ज़ी के बाद।

नमाज़े सुबह व असर के बाद

(1)बग़ैर पांव (पैर)बदले.बग़ैर कलाम किए दस दस बार–ला अला ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी क लहू लहुलमुल्कु व ल हुल हम्दु बि य दिहिलख़ैरु युहयी व युमीतु व हु व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर ।

फायदाः–हर आफत व शैतान व मकरुहात से बचे. गुनाह मुआ़फ हों उस के बराबर किसी की नेकियां न मिले।

(2)अल्लाहुम्‌ म अजिरनी मिनन्नार । सात सात बार फायदाः–दोज़ख़ दुआ़ करे कि इलाही उसे मुझ से बचा ।

इजाज़त नामा

अल वज़ीफतुल करीमा में वह दुआ़यें हैं जो खुद आ़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा के विर्द में थीं अगर कोई मुसलमान इन दुआ़ओं को रोज़ाना बिर्द में रखे यक़ीनन वली हो जाये और ज़बान से जो कह दे। वही हो कर रहे। और आ़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फाज़िले बरैलवी रदियल्लाहु अ़न्ह ने इन सब वज़ायफ की तमाम सुन्नी भाईयों को इजाज़त फरमा दी है।

रात को सोते वक़्त के अ़म्लियात ज़रुर पढ़ें।

(1)आयतल कुर्सी एक बार (2)तस्बीहे फातिमा (3)अल्हमदु व चारों क़ुल इ(4)और अलिम लाम मीम से मुफ्लिहून तक (5)सूरह कहफ की आखिरी की चार आयत (6)और सूरह काफिरुन पढ़ते पढ़ते सो जाए।

नोटः इन दुआओं में से कोई भी दुआ़ पहले याद कर के किसी सुन्नी आ़लिमे दीन से सहीह़ कर वा लें। याद कर के पहले सुना दें। और कोई दुआ़ समझ में न आये तो नीचे दिए गए नम्बर पर सम्पर्क करें। और रोज़ाना शाम में दरुद शरीफ ज़्यादा से ज़्यादा 500 बार पढ़ें और कम अज़ कम 100 बार पढ़ें। ज्यादा से ज्यादा पढ़ें।

इस्लाह करना हमारा काम है अ़मल करना ना करना आप का काम है। इस पर्चे की हिफाज़त करें

रज़ा हिन्दी इस्लामिक लाइब्रेरी,जामा मस्जिद दमुआ

मौलाना कारी हकीम मुहम्मद अब्दुर्रहीम खान कादरी रज़वी , जमदा शाही, जिला बस्ती (यु.पी)पिन 272002मोबाईल मोबाईल नम्बर 07415066579 - जामा मस्जिद दमुआ,जिला छिन्दवाड़ा (मध्यप्रदेश) 480555

E:mail-khanjamdashahi@gmail.com www.jamdashahi.blogspot.com

www.ISSUU.COM/abdurrahimkhan

बड़ा पंज गन्ज क़ादरी

(1) या ह़य्यु क़य्यूमु लाइला ह इल्ला अन्‍ त सुबहा न क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन १०० बार सुबह फजर बाद
(2) या ह़य्यु क़य्यूमु बिरह़मति क अस्तग़ीषु १०० बार बाद नमाज़े ज़ोहर
(3) हस्बुनल्लाहु व निअ़मल वकील १०० बार बाद नमाज़े अस्र
(4) रब्बि इन्नी मस्सनियद्दुर्रु व अन्‍ त अरह़मुर्राहिमीन 100 बार बादे नमाज़े मग़्रिब
(5) व उफव्विदु अमरी इलल्लाहि इन्नल्ला ह बसीरुम्बिल इबाद १०० बार बादे नमाज़े इशा
नोट: अव्वल आखिर दरुद शरीफ

पंज गन्ज क़ादरी

(1) या अ़ज़ीज़ु या अल्लाह 100 बार बादे नमाज़े फजर
(2) या करीमु या अल्लाह 100 बार बादे नमाज़े ज़ोहर
(3) या जब्बारु या अल्लाह 100 बार बादे नमाज़े अस्र
(4) या सत्तारु या अल्लाह 100 बार बादे नमाज़े मग़्रिब
(5) या ग़फ्फारु या अल्लाह 100 बार बादे नमाज़े ईशा
। अव्वल आखिर दरुद शरीफ ......

रात को पढ़ने की सूरतें

(1) सूरह यासीन सुबह शाम–मग़्फिरत है।(2) सूरह दुखान–सुबह इस ह़ाल में उठे कि सत्तर हज़ार फरिश्ते उस के इस्तेग़्फार करते हों (3) सूरह वाक़िआ़–फाक़ा से अमान है।(4) सूरह मुल्क–अज़ाबे क़ब्र से अमान है।

नमाज़े सुबह के बाद

अल्लाहुम्मकफिनी कुल ल मुहिम्मिन ह़ैषु शिअ त वमिन ऐ न शिअ त हस्बियल्लाहु लिदीनी हस्बियल्लाहु लिदुनया य हस्बियल्लाहु लिमा अहम्मनी हस्बियल्लाहु लिमम्बग़ा हस्बियल्लाहु लिमन ह स दनी हस्बियल्लाहु लिमन कादनी बिसूइन हस्बियल्लाहु इन्दल मौति हस्बियल्लाहु इन्दल मसा अल ति फिल क़ब्रि हस्बियल्लाहु इन्दल मीज़ानि हस्बियल्लाहु इन्दस्सिराति ह़स्बियल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व अ़लैहि तवक्कल व हु व रब्बुल अ़र्शिल अ़ज़ीम ०

फाइदा:–एक बार या तीन बार इस का फाइदा यह है कि हर मुश्किल आसान हो सब परेशानियां दूर हों.ईमान सलामत रहे अल्लाह तआ़ला हर जगह मदद फरमाए.दुशमन बर्बाद हों.ह़ासिद अपनी आग में जलें.नज़अ़ आसान हो.क़ब्र में शादां हो.नेकियों का पल्ला भारी हो.पुल सिरात पर आसानी हो।

पांचों नमाज़ के फर्ज़ के बाद

(1)तीन बार कलमा तय्यब शरीफ । लाइला ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम)
(2)तीन बार इस्तग़्फार शरीफ। अस्तग़्फिरुल्लाहल्लज़ी ला इला ह इल्ला हुवल ह़य्युल क़य्यूम व उतूबु इलैह।
(3)एक बार आयतल कुर्सी। *अऊ़ज़ुबिल्लाहिमिनश्शैत़ॉनिर्रजीम बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम0* अल्लाहु ला इला ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूम,ला त खुज़ुहू सि न तुं‍ वला नौम लहू मा फिस्समावाति वमा फिलअर्दि,मन ज़ल्लज़ी यशफउ़ इन्दहू इल्ला बिइज़्निही यअ़लमु मा बै न ऐदीहिम वमा ख़ल्फहुम वला युह़ीतू न बिशैइम्मिन इ़ल्मिही इल्ला बिमा शा अ वसि अ़ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल अर्दि वला यऊदुहू हिफ्ज़ुहुमा वहुवल अ़लिय्युल अ़ज़ीम ०
(4)तीन बार दाहना हाथ माथे पर रख कर पढ़ें। बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला इला ह इल्ला हुवर्रहमानुर्रहीम अल्लाहुम्‍ म अज़्हिब अ़न्निल हम्‍ म वल हुज़्न व अ़न अहलिस्सुन्नह –फरयदा ग़म व परेशानी से निजात
(5)[illegible]

यह पाचों वज़ीफे बाद नमाज़े अ़सर व बाद नमाज़े फजर दस दस बार
(1)रब्बि इन्नी मग़्लूबुन फन्तसिर
(2)रब्बि इन्नी मस्सनियद्दुर्रु व अन्‍ त अरह़मुर्राहिमीन
(3)सयुहज़मुल जम्अु व युवल्लूनद्दुबुर
(4)अल्लाहुम्‍ म इन्ना नजअ़लु क फी नुहूरिहिम व नऊज़ुबि क मिन शुरुरिहिम
(5)हस्बियल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व अ़लैहि तवक्कल्तु वहु व रब्बुल अ़र्शिल अ़ज़ीम 0

नमाज़े मग़्रिब के बाद

फर्ज़ पढ़ कर छ: (6)रकअ़तें एक ही निय्यत से हर दो रकअ़त पर अत्तहिय्यात दरुद व दुआ़ और पहली. तीसरी.पांचवी सुब्हानकल्लाहुम्मा से शुरुअ़ करे उन में पहली दो सुन्नते मुअक्किदा होंगी बाकी चार नफ्ल सलातुल अव्वाबीन है। और अल्लाह अव्वाबीन के लिए ग़फूर है।